Course- M.A Education,Part-1

Papar- 3rd, Philosophical Foundation of Education

Prepared by- Dr. Meena Kumari

Topic- Baudh Darshan & Education

....

बौद्ध दर्शन एवं शिक्षा

(1) **प्रस्तावना-** बौद्ध धर्म कठोर जिन पद्धति एवं तपस्या पर आधारित ना होकर मध्यम मार्ग पर स्वचालित होने वाला धर्म था। जिसे महात्मा बुद्ध प्रभोत्पाद माना गया है। महात्मा बुद्ध का मानना था की मनुष्य को अपने शारीरिक सामर्थ्य एवं शक्ति के अनुसार ही तपस्या, व्रत, उपवास आदि धार्मिक कर्मकांड करने चाहिए, क्योंकि धर्म साधन का आधार शरीर है। अतः व्रत उपवास आदि शारीरिक सामर्थ एवं शक्ति के अनुसार ही व्यक्ति को करने चाहिए।

(2) **बौद्ध दर्शन तथा शिक्षा-** बौद्ध दर्शन के अनुसार बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था मठों एवं विहारों में होती थी। इन मठों का संचालन भिक्षु संघ के हाथ होता था। इन मठों में एक आचार संहिता बनी हुई थी, जिन का उल्लंघन करने पर गुरु एवं शिष्य को कठोर दंड भुगतना पड़ता था। गुरु शिष्य के संबंध पिता तथा पुत्रवत होते थे। शिष्य का कार्य तन मन से गुरु की सेवा करना था। गुरु के समस्त कार्यों की देखरेख शिष्य के कंधों पर होती थी। शिष्यों का जीवन अति सादा होता था। गुरु भी शिष्य के समक्ष आदर्श जीवन प्रस्तुत करता था, ताकि शिष्य उसको आदर्श मानकर जीवन में त्याग संयम को बल दे सके।

(3) **बौद्ध दर्शन के सिद्धांत-** बौद्ध दर्शन के सिद्धांत जिसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक मजबूत आधार प्रदान किया, वह उनके धर्म ग्रंथ त्रिपिटक में वर्णित है। जिसका वर्णन निम्नलिखित हैं-

1. **चार आर्य सत्य**-बौद्ध दर्शन के सिद्धांत में महत्वपूर्ण चार आर्य सत्य है, जो बौद्ध धर्म की आधारशिला है। जिसमें प्रमुख दुख को माना गया है। बुद्ध के अनुसार जीवन दुखों से परिपूर्ण है, जिसके कारण जीव जन्म मरण के चक्र से छुटकारा नहीं पाता है। संसार की समस्त वस्तुएं, जिन्हें हम अपने लिए सुखदाई समझते हैं, वास्तव में वही हमारे दुख का कारण होता है।

   दूसरा, आर्य सत्य दुखों का उद्गम है ,जिसका कारण अज्ञानता को माना गया है, क्योंकि अज्ञानता के कारण ही इच्छा की उत्पत्ति होती है। इच्छा से कर्म और कर्म से पुनर्जन्म में नई इच्छाओं की उत्पत्ति होती है। यही संसार का दुष्चक्र भाव है और इसी में समस्त दुखों की उत्पत्ति होती है।

   तीसरा, आर्य सत्य दुखों का निवारण है, जिसमें बौद्ध दर्शन का विश्वास है कि मानव के समस्त दुखों का निवारण किया जा सकता है क्योंकि दुखों का मूल कारण तृष्णा है तो अगर हम तृष्णा दूर कर दें तो हमें दुख से छुटकारा मिल सकता है और दुखों से मुक्त होकर ही हम मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

   चौथा, आर्य सत्य दुखों के निवारण का मार्ग है जिसे उन्होंने अष्टांगिक मार्ग कहा है, जिसके अनुसरण से मनुष्य दुखों से स्वयं को मुक्त कर सकता है।
2. **अष्टांगिक मार्ग-** बौद्ध धर्म में मोक्ष प्राप्ति और दुखों के निवारण के लिए अष्ट मार्ग के अनुसरण की शिक्षा दी है। इस मार्ग को मध्यम मार्ग भी कहा जाता है। इसके अनुसार मनुष्य को ना तो कठोर तपस्या और ना ही कठिन व्रत करके शरीर को कष्ट देने की आवश्यकता है और ना ही सांसारिक सुखों में लीन रहने की अनुमति है। बुद्ध के अनुसार मानव को निम्नांकित अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए-
   1. सम्यक दृष्टि
   2. सम्यक संकल्प
   3. सम्यक वाक्

4. समय कर्म

5. सम्यक जीवन

6. सम्यक भाव

7. सम्यक स्मृति

8 .सम्यक समाधि

3. सदाचार के नियम- महात्मा बुद्ध ने भिक्षु के लिए सदाचार हेतु 10 नियम बताए हैं। सत्य,बोलना, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, संग्रह प्रवृत्ति का त्याग, चोरी ना करना, सुगंधित पदार्थों का त्याग, कोमल सैया का त्याग, नाचने गाने का त्याग, कामिनी कंचन का त्याग और असमय भोजन का त्याग।

4) अनीश्वरवाद- बौद्ध दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। इनका मानना है कि संसार की उत्पत्ति प्रतीत्य समुत्पाद नियम के अनुसार हुई है, अर्थात व्यक्ति समस्त अज्ञानता के कारण कर्म करता है ,जिसे कल्पनाएं उत्पन्न होकर तृष्णा का भाव जागृत करती है, यही तृष्णा संसार चक्र और आवागमन का क्रम दुख का मूल कारण है। संसार में बार-बार जन्म लेना और इससे संबंधित दुखों का कारण ईश्वर नहीं बल्कि मनुष्य की अज्ञानता है।

5) कर्मवाद- महात्मा बुद्ध कर्म को बहुत महत्व देते थे। उनका मानना था मनुष्य जैसा कर्म करेंगे ,उन्हीं के अनुसार उन्हें फल भोगना पड़ेगा, क्योंकि कर्म के अधीन ही सृष्टि के समस्त क्रियाकलाप होते हैं।

6) निर्वाण- बौद्ध दर्शन के अनुसार मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। महात्मा बुद्ध के अनुसार जब मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं का अंत कर देता है ,तब उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

4) बौद्ध दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य- बौद्ध दर्शन के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य चारित्रिक विकास पर जोर देना, आध्यात्मिक विकास करना एवं निर्वाण प्राप्ति पथ पर प्रशस्त रहना माना गया है। बौद्ध दर्शन के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चारित्रिक विकास करना है। विद्या अध्ययन हेतु जब छात्र किसी बौद्ध मठ में प्रवेश लेते थे तो उनके नैतिक चरित्र के विकास के लिए उनसे 8 प्रतिज्ञाएं कराई जाती थी। जिनमें अहिंसा,ब्रम्हचर्य, सत्य, मद्यपान का त्याग, असमय भोजन का त्याग ,श्रृंगार आदि का त्याग एवं उच्चासन पर ना सोने की प्रतिज्ञा शामिल है। बच्चों को प्रारंभ से ही चार आर्य सत्य की शिक्षा शिक्षा दी जाती थी ,जिनसे उन्हें प्रारंभ से ही त्याग में जीवन जीने की प्रेरणा मिलती थी, ताकि उनका उच्च आध्यात्मिक विकास हो सके।

5) बौद्ध दर्शन एवं पाठ्यक्रम- बौद्ध शिक्षा वर्तमान युग की तरह औपचारिक नहीं थी, यह बौद्ध मठों में दी जाती थी। बौद्ध साहित्य से यह स्पष्ट विदित होता है कि शिक्षा पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक शिक्षा तथा निर्वाण प्राप्ति ही एक मात्र उद्देश्य था। बौद्ध शिक्षा पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा बौद्धिक शिक्षा व्यवहारिक विषयों का ज्ञान, बौद्ध धर्म का प्रचार एवं सत्य मार्ग की खोज शामिल था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण के अनुसार बौद्ध कालीन शिक्षा दो भागों में विभक्त थी ,जिसके पृथक पाठ्यक्रम थे।

प्रारंभिक शिक्षा, जिसमें 6 वर्ष की आयु पूरा करने के बाद बच्चों का प्रवेश कराया जाता था। प्रवेश का एक मुहूर्त होता था ।बच्चे को सिद्ध वस्तु नामक बालपोथी को पढ़ना था। जिसमें 12 अध्याय 49 अक्षरा और 300 श्लोक भी शामिल थे। इस बाल पोथी के बाद छात्रों को पांच विषयों, जिनमें शब्द विद्या, शिल्प विद्या, चिकित्सा विद्या हेतु विद्या एवं आध्यात्मिक विद्या का अध्ययन करना पड़ता था। वही उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यवहार प्रधान था। जिसमें अन्य धर्मों के धर्म ग्रंथ एवं दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन के प्रति जोर दिया जाता था। पाठ्यक्रम के विषयों के अतिरिक्त कुछ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर भी जोड़ दिया जाता था। जिसमें 8 या 10 मोहरो से खेल, भूमि पर रचित, आकृतियों के ऊपर से छलांग लगाना, ढेर को बिना हिलाएं किसी विशिष्ट वस्तु को निकालना ,चौंड, रेखा चित्र बनाना, गेंद खेलना, तूरही बजाना, हल चलाने की नकल करना, नकली पवन चक्की बनाना, पैमाना का अनुमान लगाना धनुष बाण प्रतियोगिता आदि शामिल है।

6) बौद्ध दर्शन तथा शिक्षा विधि- बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में निमनलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था-

अ) व्याख्यान विधि- बौद्ध युग में इस विधि को प्रवचन विधि के नाम से जाना जाता था । इस विधि से विशाल जनसमूह को थोड़े समय में अधिकाधिक ज्ञान दिया जा सकता था। यह विधि श्रोता की गुरु के प्रति श्रद्धा सम्मान एवं आदर की भावना का सूचक है।

ब) वार्तालाप विधि- इस विधि का प्रयोग कर गुरु एवं शिष्य एक स्थान पर बैठकर बौद्ध धर्म के सिद्धांत एवं दर्शन का मनन एवं चिंतन करते थे। गूढ विषयों के शंका का समाधान वार्तालाप विधि द्वारा स्पष्ट किए जाते थे । प्रायः इस विधि का प्रयोग उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता था।

स) वाद विवाद विधि- अपनी बात को सिद्ध करने के लिए वाद विवाद विधि का प्रयोग किया जाता था । उस युग में प्रायः धार्मिक शास्त्रों का आयोजन राजा महाराजा किया करते थे। उस धर्म में पंडित अपने धर्म की श्रेष्ठता इन शास्त्रार्थ सभाओ में सिद्ध करते थे। इस विधि में चिंतन मनन का महत्वपूर्ण स्थान है । प्रश्नोत्तर विधि का भी इसमें समावेश स्वतःही हो जाता है।

द) मौखिक विधि- कक्षा में गुरु पाठ को सुनाते थे। सामूहिक रुप से उस का उच्चारण करते थे। इस विधि के माध्यम से धार्मिक सिद्धांत, नियम, दृष्टांत आदि को स्मरण कराया जाता था। इस विधि में गुरु मार्गदर्शक होता है और शिष्य पठित पाठ का बार-बार चिंतन एवं मनन करता है।

इस प्रकार बौद्ध दर्शन भारतीय शिक्षा की आधारशिला है, जिसमें बच्चों के सर्वांगीण विकास का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त होता है। शिक्षा में बौद्ध दर्शन का समावेश होने से देश के विकास की गति को एक सही दिशा मिल सकती है।